jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:10 PM Page 26

लिटाया गया और उनके चेहरे पर पानी के छींटे देकर उन्हें होश में लाने का प्रयास हुआ। पुलिस जे.पी. और नानाजी को गिरफ्तार करके अलग-अलग ट्रकों में ले गई। नानाजी को रात में एक बजे अस्पताल पहुंचाया गया और उनकी टूटी कलाई पर प्लास्टर चढ़ाया गया। अगली प्रातः उन्हें जेल वापस ले गए।

नानाजी ने अपनी प्रत्युत्पन्नमति, साहस और त्याग भावना से जे.पी. का विश्वास इस सीमा तक अर्जित किया कि 26 नवंबर 1974 को दिल्ली में बुद्धिजीवियों के एक सम्मेलन में जे.पी. ने संघ और जनसंघ की देशभक्ति की प्रशंसा करके उनके आलोचकों को निरूत्तर कर दिया। अब तक जे.पी. बिहार आंदोलन को छात्र आंदोलन की परिधि से आगे बढ़ाकर व्यवस्था-परिवर्तन की अखिल भारतीय संपूर्ण क्रांति का रूप देने की दिशा में काफी आगे बढ़ गए थे। जे.पी. वोट और दल की राजनीति का विकल्प ढूंढ रहे थे इसीलिए वे अपने आंदोलन को दलीय राजनीति से अलग रखना चाहते थे किन्तु 1 नवंबर 1974 को इंदिरा गांधी ने जे.पी. को चुनाव के अखाड़े में शक्ति-परीक्षण की चुनौती दे दी, जिसे न जाने क्यों, उन्होंने, 18 नवंबर को पटना की विराट जनसभा में स्वीकार कर लिया। दिल्ली में चार प्रमुख विपक्षी दलों के नेताओं ने जे.पी. आंदोलन को अपना समर्थन घोषित कर दिया। सभी गैरकम्युनिस्ट विपक्षी दल जे.पी. की लोकप्रियता और उनके द्वारा प्रवर्तित जनांदोलन के ज्वार पर सवार होकर सत्ता में पहुंचने के सपने देखने लगे। यहीं से 'संपूर्ण-क्रांति आंदोलन' का भटकाव आरंभ हुआ। अभी तक जे.पी. किसी भी राजनीतिक नेता या दल को अपने मंच पर स्वीकार नहीं कर रहे थे, पर अब उन्होंने सभी दलों को अपने संघर्ष से जोड़ने का प्रयास शुरू कर दिया। 26 नवंबर को जे.पी. ने दिल्ली में गैरकम्युनिस्ट विपक्षी दलों के 50 प्रमुख नेताओं की बैठक बुलाई। घटनाचक्र तेजी से घूम रहा था। इंदिरा गांधी अधिनायकवाद की ओर बढ़ रही थीं, विपक्ष लामबंद हो रहा था। गुजरात की सरकार को बर्खास्त करके नए चुनाव कराने के लिए मोरारजी देसाई दिल्ली में आमरण अनशन पर बैठ गए। सरकार बर्खास्त हो गई। 12 जून को विपक्षी दलों का जनता मोर्चा गुजरात विधानसभा के चुनाव जीत गया। उसी दिन प्रयाग उच्च न्यायालय ने राजनारायण की चुनाव याचिका पर लोक सभा के लिए इंदिरा गांधी का चुनाव अवैध घोषित कर दिया। विपक्ष ने इंदिरा गांधी के इस्तीफे की मांग उठाई। उन्होंने मना कर दिया।

समाजवादी रवि रॉय व मधु लिमये तथा जनसंघ नेता सुंदर सिंह भंडारी के साथ

डीआरआई, दिल्ली में बाबू जगजीवन राम व नानाजी

सीधे टकराव की स्थिति पैदा हो गई। अब तक नानाजी जे.पी. और संघ परिवार व अन्य दलों के बीच विश्वास का पुल बन चुके थे। इन्दिरा गांधी की बर्खास्तगी की मांग को लेकर 13 जून को नानाजी अन्य नेताओं के साथ राष्ट्रपति भवन के बाहर धरने पर बैठ गए। नानाजी के अनुरोध पर 20 जून, 1975 को दिल्ली में चार दलों (भारतीय लोक दल, संगठन कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी एवं जनसंघ) की कार्यसमितियों की संयुक्त बैठक आयोजित हुई। वह बैठक चार दिन चली, उसमें लोक संघर्ष समिति बनाने का सर्वसम्मत निर्णय हुआ। जयप्रकाश जी के आग्रह पर मोरारजी उसके अध्यक्ष और नानाजी महामंत्री चुने गए। 25 सदस्यों की कार्यसमिति बनाई गई।

25 जून को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विराट जनसभा हुई जिसे जे.पी., बीजू पटनायक और नानाजी ने संबोधित किया। इस सभा में इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री पद से हटाने के लिए 29 जून से देशव्यापी आंदोलन आरंभ करने का कार्यक्रम घोषित किया गया। सभा के बाद नानाजी राजमाता सिंधिया को विदा करने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन गए। वे प्लेटफार्म पर टहल रहे थे कि गुप्तचर विभाग के किसी अधिकारी ने चुपके से उनके कान में कहा कि आज रात को आपातकाल की घोषणा के साथ आप सब नेता गिरफ्तार होंगे, अतः आप यहां से खिसक जाइए। नानाजी स्टेशन से ही भूमिगत हो गए। यह चेतावनी सही निकली, देर रात जे.पी. आदि सभी नेताओं की बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी शुरू हो गई। अब लोक संघर्ष समिति के सचिव के नाते भूमिगत नानाजी पर अधिनायकवाद के विरूद्ध संघर्ष के संचालन का गुरुतर दायित्व आ पड़ा। इसे निभाने के लिए उन्हें अपनी वेशभूषा और शक्ल बदलनी पड़ी। धोती-कुर्ते की जगह शर्ट-पैंट पहनी, सफेद बालों को काला किया, गंजेपन को ढकने के लिए विग लगाई। ऐसा हुलिया बनाया कि निकटतम मित्र और संबंधी भी पहली भेंट में उन्हें नहीं पहचान पाते थे। भूमिगत स्थिति में दो महीने बाहर रहकर उन्होंने देशव्यापी संघर्ष का तंत्र खड़ा किया। सूचनाओं के आदान-प्रदान और लोक शिक्षण के लिए अंडरग्राउंड बुलेटिन निकालने की व्यवस्था की। उनको इधर-उधर ले जाने में डॉ. रागिनी जैन ने अपनी सात दिन की कन्या को अपनी माँ के पास छोड़कर प्रातः से रात्रि तक नानाजी के ड्राइवर की भूमिका निभाई। डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी की पत्नी रुखसाना स्वामी को उन्होंने विदेशों में प्रचार के लिए भेजा। इस सब अभियान में